भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: सपनों के से दिन कार्यपत्रिका की तिथिः ----------

--

संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टीफन तिथिः----------

विद्यार्थी का नाम :---------- कक्षा : X ब

	नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।	
प्र 1.	कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती- पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?	3
उ.	लेखक बताता है कि बचपन में उनके अनेक साथी हरियाणा तथा राजस्थान की बोली बोलते थे। उनकी बोली उन्हें समझ नहीं आती थी। इसलिए वे कई बार उनकी बोली की हँसी भी उड़ाते थे। परंतु जब वे बच्चे मिलकर खेलने लगते थे तो उनकी बोली अपने-आप समझ माने लगती थी। इससे सिद्ध होता है कि आपसी व्यवहार में कोई भी भाषा बाधा नहीं डाला करती।	
प्र 2.	पीटी साहब की शाबाश फ़ौज के तमगों-सी क्यो लगती थी स्पष्ट कीजिए।	3
उ.	सभी बच्चे पीटी मास्टर के रौबदाब से डरते थे। इसलिए वे उनकी शाबाशी और प्रशंसा को भी बहुत महत्व देते थे। इसलिए उनसे मिली गुड उन्हें अन्य अध्यापकों से मिली गुडों से भी अधिक मूल्यवान प्रतीत होती थी। यही कारण हो कि पीटी मास्टर से मिली शाबाशी उन्हें फ़ौज के तमगे के समान महत्वपूर्ण लगती थी।	
प्र 3.	नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?	2
उ.	नई श्रेणी में जाते समय उत्साह होना चाहिए था। इसी कारण अगली कक्षा की किताबों को पाकर भी उमंग होनी चाहिए थी परंतु लेखक उदास हो जाता था। उसके दो कारण थे--- 1. लेखक को अगली कक्षा की पढ़ाई अधिक कठिन प्रतीत होती थी। 2. उसे नए मास्टरों की मार-पीट का भय सताता था। वे पुराने छात्रों से बहुत अधिक अपेक्षा किया करते थे। अपेक्षा पूरी न होने पर वे छात्रों की चमड़ी उधेड़ने को तैयार रहते थे।	
प्र 4.	स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्वपूर्ण आदमी फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था?	3
उ.	लेखक ने फौजी जवानों के फुलबूट, शानदार वर्दी, उनकी लेफ्ट-राइट, परेड आदि को देखा	

	था। अपनी गरीबी के कारण वह फौज के जवानों के बहुत महत्वपूर्ण मानता था। यही कारण है कि जब सकाउट की वर्दी पहनकर, गले में रंगीन रुमाल डालकर, झंडियाँ हिलाते हुए परेड करता था तो उसे फ़ौजी जवानों की सी शान अनुभव होती थी।	
प्र 5.	हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?	3
उ.	हेडमास्टर शर्मा जी ने देखा कि पीटी मास्टर ने चौथी कक्षा के छात्रों को क्रूरतापूर्वक मुर्गा बना रखा है। केवल इतना ही नहीं, उसने उन्हें पीठ ऊँची करने का भी आदेश दिया। यह स्थिति बहुत ही भयंकर थी। विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए यह दंड़ भीषम यातना जैसा था। इसे अनुचित मानते हुए हेडमास्टर शर्मा जी पीटी मास्टर को मुअत्तल कर दिया।	
प्र 6.	लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?	3
उ.	लेखक मानता है कि बचपन में उन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था फिर भी स्काउटिंग का अभ्यास करते समय उन्हें स्कूल अच्छा लगने लगता था। जब वे पीली-नीली झंड़ियाँ लेकर पीटी साहब की सीटी पर या वन-टू-थ्री कहने पर झंड़ियाँ ऊपर-नीचे या दाएँ-बाएँ करते थे तो उन्हें बहुत अच्छा लगता था। खाकी वर्दी और गले में दो रंगा रूमाल लटकाना भी उन्हें अच्छा लगता था। विशेष रूप से जब पीटी मास्टर उन्हें शाबाशी देते थे तो उन्हें स्कूल बहुत अच्छा लगने लगता था।	
प्र 7.	लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था? और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति बहादुर बनने की कल्पना किया करता था?	5
उ.	लेखक अपनी स्कूली जीवन में छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने की बात तब सोचना शुरू करता था जब छुट्टियाँ खत्म होने में एक महीना बाकी रह जाता था। हिसाब के मास्टर जू कम-से-कम 200 सवालदिया करते थे। लेखक सोचता था कि यदि उसने रोज 10 सवाल भी किए तो 20 दिन में पूरे सवाल हो जाएँगे। परंतु खेलते-खेलते दस दिन और बीत जाते थे। फिर वह सोचता कि एक दिन में 10 की बजाय 15 सवाल भी निकाले जा सकते हैं। कुछ साथी सोचते थे कि सवाल करने से अच्छा मास्टर जी की मार खाना है।वे बहादुरी से मार खा लिया करते थे।कभी-कभी लेखक भी ऐसा बहादुर बनने की कल्पना कर लिया करता था।	
प्र 8.	पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।	5
उ.	इस पाठ में वर्णित पीटी मास्टर की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं- <u>कठोर पीटी मास्टर</u> --- पीटी मास्टर बहुत कठोर था। वह छात्रों को अनुशासन में लाने के लिए बहुत कठोर और क्रूर दंड़ दिया करता था। छात्रों को घड़की देना, ठुड्ढे मारना, उन पर बाघ की तरह झपटना, उनकी खाल खींचना उसके लिए बाएँ हाथ का खेल था। उसे यह सहन नहीं था कि कोई बच्चा कतार से बाहर हो या टेढ़ा खड़ा हो या अपनी पिंड़ली खुजलाए। वह ऐसे बच्चों को समझाने की बजाय कठोर दंड़ दिया करता था।	

	<u>अयोग्य अध्यापक</u> -- पीटी मास्टर जब फारसी पढ़ाने लगता था तो और भी क्रूर हो उठता था। वह बच्चों को समझाने की बजाय डंडे से काम कराना चाहता था। वह चाहता था कि बच्चे भय के मारे पाठ याद कर लें। जिस पाठ को कक्षा का एक भी बच्चा याद न कर पाया, वह पाठ ज़रूर या तो कठिन होगा या छात्र अधिक योग्य न होंगे। दोनों ही स्थितियों में मास्टर का पीटना बेतुका काम था। ऐसा व्यक्ति खच्चर तो हाँक सकता है, छात्रों को नहीं पढ़ा सकता। स्वाभिमानी --- पीटी मास्टर का सिद्धांत है कि लड़कों को डाँट-डपट कर रखा जाए।उसकी सोच गलत हो सकती है। परंतु अपनी नज़रों में वह ठीक है। इसलिए चौथी कक्षा के बच्चों को मुर्गा बनाकर कष्ट देना उसे अनुचित नहीं लगता। अतः जब हेड़मास्टर उसे कठोर दंड़ देने पर मुअत्तल कर देते हैं तो वह गिड़गिड़ाने नहीं जाता। वह आराम से अपने कमरे में रहकर चेलों की सेवा लेता है और तोते से मीठी-मीठी बाते करता है। वह मीठी-मीठी बातें केवल तोते से ही कर सकता है, हाड़-माँस के बच्चों से नहीं। मानो बच्चे तो उसके शिकार हैं। घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या?	
प्र 9.	विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।	3
उ.	विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पहले उन्हें कठोर यातनाएँ दी जाती थीं। उन्हें ठुड्डों से, बालों से खूब पीटा जाता था। नन्हें बच्चों को मुर्गा बनाकर थकाया जाता था। वर्तमान काल में बच्चों को शारीरिक दंड़ नहीं दिया जा सकता । मेरे विचार से, शारीरिक दंड़ पर रोक लगाना बहुत आवश्यक कदम है।बच्चों को विद्यालय में शारीरिक दंड़ से नहीं अपितु मानसिक संस्कार द्वारा अनुशासित करना चाहिए। इसके लिए पुरस्कार, प्रशंसा, निंदा आदि उपाय अधिक ठीक रहते हैं।	
प्र 10.	प्रायः अभिभावक (Guardian) बच्चों को खेल-कूद में ज्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बरबाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए— (क) खेल आपके लिए क्यों ज़रूरी है? (ख) आप कौन से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?	5
उ.	(क) खेल आनंदमय होते हैं। आनंद लेना हर मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है।उसी से बच्चों को जीने की शक्ति मिलती है। खेलों के कारण उनके जीवन में रूचि बढ़ती है। खेलों से स्वास्थ्य बढ़ता है। अनुशासन आतात है। मन में साहस, हिम्मत और बहादुरी आती है। अतः खेल जीवन के लिए ज़रूरी हैं।	

	(ख) अभिभावक चाहते हैं कि बच्चे पढ़ाई करें। वे खेलों में समय लगाने को बेकार मानते हैं। उन्हें लगता है कि खेलों में भूले रहने से बच्चे पढ़ाई में पिछड़ जाएँगे। इससे वे उन्नति नहीं कर पाएँगे। मैं अभिभावकों की भावना का ध्यान रखूँगा। मैं दिन-भर खेलते रहने की बजाय खेल और पढ़ाई में संतुलन बिठाऊँगा। मैं प्रतिदिन डेढ़ से दो घंटे तक खेला करूँगा। छुट्टियों में कभी-कभी अधिक भी खेला करूँगा। इसके लिए मैं स्वयं पर नियंत्रण रखूँगा। मैं अपनी दिनचर्या को इस प्रकार निश्चित करूँगा कि खेलों के कारण मेरी पढ़ाई में बाधा न पड़े। बल्कि खेलों से मुझे जो आनंद और शक्ति मिले, उसे मैं पढ़ाई में झोंक दूँ।	